प्रार्थना : एक नए विश्वासियों के जीवन का हिस्सा

उद्धार के द्वारा जो नया जीवन शुरू होता है, वह प्रार्थना के द्वारा पोषित होता है। यदि परमेश्वर का वचन आत्मिक भोजन है, तो प्रार्थना आत्मिक जल है। जैसे हमारे शरीर को जीवित रहने के लिए भोजन और जल दोनों की आवश्यकता होती है, वैसे ही मसीह में जीवन बिना प्रार्थना के नहीं जीया जा सकता।

प्रार्थना क्या है?

प्रार्थना परमेश्वर से बात करना है—और साथ ही, उसे सुनना भी। यह केवल शब्दों की पुनरावृत्ति या कोई धार्मिक रस्म नहीं है, बल्कि यह हमारे और परमेश्वर के बीच एक जीवित और व्यक्तिगत संबंध है।

> “तू मुझसे पुकार कर मांग, और मैं तुझे उत्तर दूंगा, और ऐसी बड़ी-बड़ी और कठिन बातें बताऊंगा, जिन्हें तू नहीं जानता।”
> — यिर्मयाह *33:3*
>
> “यहोवा उन सभों के समीप रहता है, जो उसे सच्चाई से पुकारते हैं।”
> — भजन संहिता *145:18*

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

प्रार्थना : एक नए विश्वासियों के जीवन का हिस्सा

हमें कब प्रार्थना करनी चाहिए ?

बाइबल में प्रार्थना करने के समय की कोई सीमा नहीं बताई गई है। इसके विपरीत , हमें निरंतर प्रार्थना करने के लिए प्रेरित किया गया है।

> □ “निरंतर प्रार्थना करते रहो। ”
> — *1* थिस्सलुनीकियों *5:17*
>
> □ “हर समय और हर प्रकार की प्रार्थना और विनती के द्वारा आत्मा में प्रार्थना करते रहो , और इसी लिए जागरूक रहो , और सब पवित्र लोगों के लिए लगातार विनती करते रहो। ”
> — इफिसियों *6:18*
>
> □ “हे यहोवा , तू भोर को मेरी बात सुनता है ; भोर को मैं तुझ से प्रार्थना करके आशा रखता हूँ। ”
> — भजन संहिता *5:3*

प्रार्थना के द्वारा मिलनेवाली आशीषें

1. हम परीक्षा में विजयी होते हैं

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

प्रार्थना : एक नए विश्वासियों के जीवन का हिस्सा

☐ “जागते और प्रार्थना करते रहो, कि तुम परीक्षा में न पड़ो; आत्मा तो उत्सुक है, परंतु शरीर दुर्बल है।”
— मत्ती *26:41*

☐ “तुम ऐसी किसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्यों पर आने वाली परीक्षा से भिन्न हो; और परमेश्वर सच्चा है, वह तुम्हें तुम्हारी सामर्थ्य से अधिक परीक्षा में न पड़ने देगा।”
— *1* कुरिंथियों *10:13*

---

2. हम पवित्र आत्मा से भर जाते हैं

☐ “जब सब लोग बपतिस्मा ले रहे थे, और यीशु ने भी बपतिस्मा लिया, और वह प्रार्थना कर रहा था, तब स्वर्ग खुल गया...”
— लूका *3:21*

---

3. समस्याओं में समाधान मिलता है

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

प्रार्थना : एक नए विश्वासियों के जीवन का हिस्सा

> “मैं तुमसे सच कहता हूँ, यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो, तो तुम इस पहाड़ से कहोगे, ‘यहाँ से हट जा और वहाँ चला जा,’ और वह चला जाएगा; और तुम्हारे लिए कुछ भी असंभव न रहेगा। परन्तु यह जाति बिना प्रार्थना और उपवास के नहीं निकलती।”
> — मत्ती *17:20-21*
>
> “धर्मी जन की प्रार्थना बड़े प्रभावशाली और फलदायक होती है।”
> — याकूब *5:16*

---

4. हमारी आवश्यकताएँ पूरी होती हैं

> “किसी बात की चिन्ता मत करो, परन्तु हर एक बात में तुम्हारी याचनाएँ प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सामने प्रस्तुत की जाएं।”
> — फिलिप्पियों *4:6*
>
> “और मेरा परमेश्वर अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हारी हर एक आवश्यकता को मसीह यीशु में पूरी करेगा।”
> — फिलिप्पियों *4:19*

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

प्रार्थना : एक नए विश्वासियों के जीवन का हिस्सा

प्रार्थना के प्रकार

प्रार्थना के कई प्रकार होते हैं—धन्यवाद, अंगीकार, मध्यस्थता, विनती, आराधना आदि। एक स्वस्थ आत्मिक जीवन के लिए ये सब आवश्यक हैं।
□ प्रार्थना के प्रकारों के बारे में और जानें

हमें कैसे प्रार्थना करनी चाहिए ?

प्रभु यीशु ने हमें प्रार्थना करने का एक आदर्श दिया है, जिसे हम "प्रभु की प्रार्थना" कहते हैं।

□ प्रभु की प्रार्थना को प्रभावी ढंग से कैसे प्रार्थना करें

□ "इसलिये तुम इस रीति से प्रार्थना करो: 'हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र माना ज

Share on:
WhatsApp

Print this post

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5